□□□□□□□□□□□□□ □□□□

जनसत्ता 04 जुलाई, 2014 : केंद्र में मोदी सरकार बनने के बाद राष्ट्रपति के अभिभाषण पर कैबिनेट मंत्री रामविलास पासवान

लोकसभा में जब धन्यवाद प्रस्ताव का अनुमोदन कर रहे थे तब विपक्षी दलों की बेंच से किसी सांसद ने उनके पुत्र चिराग का नाम उछाला तो वे भड़क गए। अपने पुत्र के बचाव में पासवान ने एक सांस में विपक्षी दलों के राजनीतिक परिवार से आए सांसदों के नाम गिना डाले। परिवारवाद पर तंज कसने वालों को आईना दिखा दिया। पासवान लोकजनशक्ति पार्टी के मुखिया हैं, जो राजग का एक घटक है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की लहर में इस बार उनके छह सांसद जीते हैं, जिनमें उनका बेटा चिराग भी है। पासवान ऐसे अकेले नेता नहीं हैं, जिनकी पार्टी में परिवार के सांसदों और विधायकों की भरमार है। भारतीय राजनीति के मौजूदा अधिकतर दल परिवारवाद के मोह में जकड़े हैं। कभी कांग्रेस और नेहरू-गांधी परिवार पर कुनबापरस्ती का आरोप लगाने वाले दल और उनके नेता भी इस 'धृतराष्ट्र ग्रंथि' के शिकार हैं।

सोलहवीं लोकसभा के निर्वाचित सांसदों की पृष्ठभूमि खंगालने पर परिवार मोह में जकड़ी पार्टियों की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। इस बार संसद के निचले सदन के पांच सौ तिरालीस में से कम से कम एक सौ तीस सांसद ऐसे हैं, जिनका रिश्ता किसी न किसी राजनीतिक परिवार से है। मतलब यह कि मौजूदा लोकसभा के लगभग एक चौथाई सांसद सियासी कुनबापरस्ती के झंडाबरदार हैं। यों भी कहा जा सकता है कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश राजशाही की पटि चुकी परंपरा पर लौट रहा है। यह संकेत इसलिए और भी चिंताजनक है कि अधिकतर पार्टियां और नेता इस परिवार मोह में जकड़े हैं।

इस एक सौ तीस की संख्या की गहराई में जाएं तो पता चलता है कि गए जमाने के राजवंशों की तर्ज पर हमारे नेता भी प्रथम वरीयता अपने बेटों को देते हैं। माता-पिता की कृपा से चुने गए नए सांसदों में आधे से अधिक (उनहत्तर) बेटे हैं, जबकि बेटियां केवल ग्यारह हैं। दस सांसदों और विधायकों की धर्मपत्नी लोकसभा की शोभा बढ़ाने के लिए चुनी गई हैं। अन्य दस के भाई जीतने में कामयाब रहे हैं। परिवार की पैरवी पर चुने गए शेष सांसद बड़े नेताओं के निकटवर्ती रिश्तेदार (चाचा, ताऊ, चचेरे भाई-बहन, बहू आदि) हैं। राजनीति में अपने खानदान को बढ़ावा देने के मामले में उत्तर प्रदेश अव्वल है। उसके तेईस सांसद राजनीतिक परिवारों से ताल्लुक रखते हैं। संख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान अविभाजित आंध्र प्रदेश का है, जहां के अठारह सांसद सियासी खानदानों के चश्मेचिराग हैं।

आयु वर्ग की दृष्टि से इन आंकड़ों का विश्लेषण करने पर तो और भी खतरनाक संकेत मिलते हैं। तीस साल से कम उम्र के पचहत्तर प्रतिशत सांसद किसी न किसी प्रतिष्ठित नेता के बेटा-बेटी हैं। तीस से चालीस साल के युवा सांसदों में से आधे राजनीतिक परिवार से आए हैं। इस बार लोकसभा में सर्वाधिक महिला सांसदों (इक्यासठ) के प्रवेश पर जश्न मनाने वाली बिरादरी को यह जान कर झटका लगेगा कि इक्तालीस प्रतिशत (पचीस सांसद) महिलाएं अपने बल पर नहीं, परिवार की कृपा से देश की सबसे बड़ी पंचायत में पहुंची हैं। यह देखने के बाद कहा जा सकता है कि राजनीतिक दलों के आम कार्यकर्ताओं के लिए मेहनत, लगन, निष्ठा और प्रतिभा के बल पर टिकट पाना, चुनाव लड़ना और जीतना निरंतर कठिन होता जा रहा है।

आजादी के बाद से अब तक संसद और वधिानसभाओं पर चुनिंदा सयिासी कुनबों के कसते शकिंजे का कोई वसि्तृत अध्ययन नहीं हुआ है□ हां, ब्रटिशि लेखक पैट्रकि फ्रैंच ने अपनी पुस्तक 'इंडया: □ पोर्ट्रेट' में पछिली लोकसभा का वशि्लेषण जरूर कयिा है□ उन्होंने पाया कि पंद्रहवीं लोकसभा के तीस वर्ष से कम उम्र के सभी सांसद कसिी न कसिी राजनीतकि परवािर से ताल्लुक रखते थे□ तीस से चालीस वर्ष आयु वर्ग के दो-तहिाई सांसद भी ऐसे ही परवािरों की देन थे□

सन 2009 के आम चुनाव में नर्विाचति डे□ सौ सांसदों की सफलता के पीछे उनके खानदानों का हाथ था□ □सोसि□शन ऑफ डेमोक्रेटकि रफिॉर्म्स (□डीआर) और पीआर□स लेजस्लिेटवि रसिर्च जैसी संस्था□ं चुनाव आयोग से संसद और वधिानसभा में वजियी होकर आ□ जन-प्रतनिधियिों की आयु, शैक्षकि योग्यता, संपत्तति और आपराधकि पृष्ठभूमि से जु□ आंक□ जुटाकर जनता को जानकारी देती हैं□ लेकनि सांसदों और वधिायकों की पारवािरकि पृष्ठभूमि का लेखा-जोखा उनके पास भी नहीं है□ अच्छा हो नयिमति जानकारी जुटा कर ये संस्था□ं भारतीय राजनीति की इस बीमारी को भी उजागर करें□

क□वा सच यह है कि जो राजनीतकि परवािर आज सत्ता के शीर्ष पर हैं उन्हीं के पास पैसा है और वही टकिट बांटने और चुनाव ल□ने का काम करते हैं□ इस □काधकिार से पार्टी कार्यकर्ता हताश हैं□ राजनीति में जन-भागीदारी घटती जा रही है□ अक्सर सत्ता की अदला-बदली कुछ परवािरों और चुनिंदा नेताओं के बीच ही होती है□

जनता का काम तो सर्फि वोट देना रह गया है□ मौजूदा व्यवस्था में साधारण पार्टी कार्यकर्ता चुनाव ल□ने की कल्पना भी नहीं कर सकता□ पैसे और ताकत के बल पर ऐसा चक्रव्यूह रच दयिा गया है, जसिमें प्रवेश का दुस्साहस करने वाला व्यक्ति अक्सर खेत हो जाता है□

भारतीय राजनीति में परवािरवाद की वषिबेल बोने का पाप कांग्रेस ने कयिा है□ आजादी के बाद जवाहरलाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने और इसके साथ ही पार्टी में परवािरवाद के बीज प□ ग□□ अपने कार्यकाल के दौरान ही उन्होंने बेटी इंदरिा गांधी को पार्टी अध्यक्ष बना दयिा था□ नेहरूजी की मृत्यु के बाद लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने और उनकी अकाल मृत्यु के बाद इंदरिा गांधी ने कुर्सी संभाली□

इंदरिा गांधी ने सुनयिोजति तरीके से पार्टी में आंतरकि लोकतंत्र का गला घोंटा□ धीरे-धीरे कांग्रेस के कद्दावर नेताओं को बाहर का रास्ता दखिा दयिा गया और पूरी पार्टी पर नेहरू-गांधी परवािर का शकिंजा कस गया□ इंदरिा गांधी के बाद राजीव गांधी और फरि सोनयिा और राहुल पार्टी के सर्वेसर्वा बन ग□□ कांग्रेस की देखा-देखी अब अन्य दलों में भी परवािरवाद की बीमारी फैल चुकी है□ अब तो भारतीय लोकतंत्र कुछ परवािरों की मुट्ठी में कैद है□ राजशाही की तरह कुर्सी का हस्तांतरण कुनबे के लोगों को होता है□

देश में फैले राजनीतकि परवािरों की फेहरस्ति पर नजर डालें तो पता चलता है कि उनकी ज□ं कतिनी गहरी हैं□ कांग्रेस पर नेहरू-गांधी परवािर की पांचवीं पी□ी (मोतीलाल नेहरू से राहुल गांधी तक) राज कर रही है□ आज अधकितर क्षेत्रीय दल भी कांग्रेस के पदचहि्नों पर चल रहे हैं□ नशि्चय ही चौधरी चरण सहि, मुलायम सहि यादव, शरद पवार, प्रकाश सहि बादल, चौधरी देवीलाल, शेख अब्दुल्ला, बाल ठाकरे, बीजू पटनायक, लालू प्रसाद यादव, रामवलिास पासवान, भजनलाल, बंसीलाल, करुणानधिि, □चडी देवगौ□ा, राजशेखर रेड्डी, □नटीआर जैसे नेताओं ने क□ी मेहनत और प्रतभिा के बल पर पहले जनता के बीच स्थान बनाया और फरि अपने बूते पार्टी ख□ी की और चुनाव जीते□ लेकनि सत्ता के शखिर पर पहुंचने के बाद वे मानो अपने कार्यकर्ताओं की कुर्बानी भूल ग□□ योग्यता को तरजीह देने के बजाय परवािर को प्राथमकिता देने लगे□ अंधे आदमी की तरह उन्होंने रेव□ी बार-बार अपने खानदान के लोगों को बांटी□

□ क उदाहरण से इस घातक प्रवृत्ति को बेहतर समझा जा सक्ता है□ इस बार समाजवादी पार्ट्टी के पांच सांसद चुने ग□ हैं और सब मुलायम सिंह यादव के परिवार से हैं□ यहां यह याद दिलाना जरूरी है कि उनके बेटे अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं□ मतलब यह कि पूरी पार्ट्टी □ क खानदान की मुट्ठी में सिमट गई है□

यह स्थिति उन पार्ट्टियों की है, जिनका परिवार प्रेम जगजाहिर है□ लेकिन ऐसे नेताओं की भी भरमार है, जो किसी पार्ट्टी के सर्वेसर्वा तो नहीं हैं, लेकिन वरिष्ठता और शीर्ष नेतृत्व से नजदीकी के आधार पर अपने बेटे-बेटी, भाई-भतीजे, पत्नी-बहू को टिक्ट दिलाने की हैसियत रखते हैं□

क्ैडर आधारित भारतीय जनता पार्ट्टी में भी ऐसे नेताओं की भरमार है□ वहां भी दूसरी-तीसरी पी□ी के सांसदों और विधायकों की संख्या अच्छी-खासी है□

राजनीति में परिवारवाद का विरोध होने पर नेता अक्सर लचर तर्क देते हैं□ उनके अनुसार जब किसी वकील का बेटा वकील, डॉक्ट२र का बेटा डॉक्टर और फिल्म स्टार का बेटा फिल्म स्टार बन सकता है, तब नेता का बेटा राजनीति में क्यों नहीं आ सकता? यह बात कहते समय वे भूल जाते हैं कि राजनीति कोई पेशा नहीं, जन-सेवा का सशक्त माध्यम है□ इसी कारण किसी जन-प्रतिनिधि की तुलना किसी डॉक्टर, वकील या फिल्म स्टार से नहीं की जा सकती□ नेताओं का दूसरा तर्क यह होता है कि वे अपने परिवार के सदस्य को टिक्ट तो दे सकते हैं, जिता नहीं सकते□

चुनाव तो जन-समर्थन से जीता जाता है□ यह बात भी आधा सच है□ चुनाव जीतने के लि□ पहले टिक्ट मिलना और फिर पैसे और साधन जुटाना जरूरी होता है□ टिक्ट देने का अधिकार और पैसे और साधन जुटाने की कला ब□ नेताओं के पास है□ ऐसे में उनका यह तर्क कैसे मंजूर किया जा सकता है?

देश में आर्थिक विकास तेज होने के बाद चुनाव में हार-जीत का दाव बहुत ऊंचा हो गया है□ इस कारण भी परिवारवाद तेजी से पनपा है□ अब जीत के लि□ पार्ट्टियां हर हथकंडा आजमाती हैं□ चुनाव प्रचार पर अरबों रुप□ फूंके जाते हैं□ 1952 में हु□ पहले लोकसभा चुनाव पर कुल पचहत्तर लाख रुप□ का खर्चा आया था, जबकि इस चुनाव में पचास हजार करो□ रुप□ व्यय होने का अनुमान है□ अब प्रत्येक प्रत्याशी को कानूनन सत्तर लाख रुप□ तक व्यय करने की इजाजत है□ पैसे, परिवारवाद और बाहुबल का ब□ता प्रभाव हमारे लोकतंत्र के लि□ ब□ा खतरा है□

संसद और विधानसभाओं में दागी, करो□पति और मुट्ठी भर परिवारों के जन-प्रतिनिधियों की संख्या लगातार ब□ती जा रही है□ चुनाव जीतने के बाद जनप्रतिनिधियों की संपत्ति में इजाफे की रफ्तार आसमान छूने लगती है□ आज राजनीति कमाई का सबसे अच्छा जरिया बन गई है□ इसीलि□ हर ब□ा नेता अपने परिवार के सदस्यों को राजनीति में उतारने का इच्छुक रहता है□ चुनाव ल□ने वाले नेताओं की संपत्ति में पांच वर्ष में औसत 134 प्रतिशत वृद्धि ब□-ब□ उद्योगपतियों को चौंकाती है□ कुछ मामलों में तो संपत्ति में वृद्धि की दर □ क हजार प्रतिशत से ज्यादा देखी गई है□ इसीलि□ अब समृद्ध व्यापारी और उद्योगपति भी संसद में प्रवेश पाने के लि□ हाथ-पैर मारते हैं□

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि किसी समाज का पतन अपराधियों की कारगुजारी नहीं, अच्छे लोगों की निष्क्रियता से होता है□ हमारा लोकतंत्र भी जनता की निष्क्रियता के कारण संकट में है□ चुनावी व्यवस्था को परिवारवाद की काली परछाइं से बाहर निकिलने की पहल जनता को ही करनी होगी□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta